B.Ed. Ist Year 1.

Subject :- Teaching of Social Science

Topic :- Organization of Co-Curricular Activities
(पाठ्य - सहगामी क्रियाओं का संगठन)

आज विद्यालयों में शिक्षण के अतिरिक्त अन्य क्रियाओं का आयोजन होता है - जैसे खेलकूद, व्यायाम, संगीत, नृत्य, नाटक, भाषण, वाद-विवाद, कविता पाठ, कवि गोष्ठी, कवि सम्मेलन आदि। इन्हें अब पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ कहा जाता है। इन क्रियाओं में खेलकूद और व्यायाम से सम्बन्धित क्रियाओं को खेलकूद और व्यायाम की क्रियाएँ कहा जाता है। संगीत और नृत्य की क्रियाओं को सांस्कृतिक क्रियाएँ कहा जाता है।

N.C.E.R.T के अनुसार :- "शिक्षक को याद रखना चाहिए कि बालक तथ्यात्मक ज्ञान के प्रदर्शन को मात्र विनम्रता के साथ सुनकर नहीं सीखता, बल्कि वह कार्य करके तथा खोज करके अपेक्षाकृत अधिक सीखता है।"

कोठारी आयोग (1964-66) के अनुसार :- "पाठ्य-सहगामी क्रियाएँ बालक की आत्मानुभूति और आत्माभिव्यक्ति का साधन हैं।"

अतः पाठ्यक्रम के साथ-2 अन्य क्रियाएँ जिनके द्वारा बालक का सर्वांगीण विकास सम्भव हो, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ कहलाती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्त्व

1. कुशल नागरिक जीवन का प्रशिक्षण
2. लोकतान्त्रिक भावना का विकास
3. मानसिक शक्तियों का विकास
4. राष्ट्रीयता की भावना का विकास
5. समाजोपयोगी कार्यों में रुचि का विकास
6. जीवन के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास
7. व्यक्तित्व का विकास।

अतः स्पष्ट है कि ये क्रियाएँ रुचिकर होती हैं और इनके आयोजन में शारीरिक श्रम करना पड़ता है। अतः इस प्रकार की क्रियाओं से बच्चों का शारीरिक, मानसिक व सामाजिक विकास होता है और बच्चों में सहयोग की भावना उत्पन्न होती है। इसलिए प्रत्येक विद्यालय में इनका आयोजन किया जाना चाहिए।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन के सिद्धान्त

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं।

⇒ बच्चों को इन क्रियाओं के महत्त्व को समझाया जाना चाहिए और उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे नियमित रूप से और स्वेच्छा से इनमें भाग लें।

⇒ उचित प्रशिक्षण की व्यवस्था उन शिक्षकों के लिए होनी चाहिए जो इन क्रियाओं का संचालन कर रहे हैं। इसके साथ ही इन क्रियाओं के सम्बन्ध के उचित निर्देशन की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

⇒ पाठ्य सहगामी क्रियाओं को संचालित करने वाले शिक्षकों के कार्यभार को बौद्धिक शिक्षण के साथ जोड़ना चाहिए इससे शिक्षकों में असन्तोष नहीं होगा।

⇒ शिक्षा विभाग को इन प्रवृत्तियों की उपलब्धियों को महत्त्व देना चाहिए, और पर्याप्त धन एवं उदारनीति का पालन करना चाहिए।

⇒ प्रत्येक प्रवृत्ति को चलाने के उद्देश्य से छात्रों को स्पष्ट रूप से बताने चाहिए, और वर्ष पर्यन्त उचित प्रकार से मूल्यांकन होना चाहिए।

⇒ इन प्रवृत्तियों का समय विभाग चक्र बनाया जाए और प्रतियोगिताओं का आयोजन सभम-2 पर किया जाना चाहिए।

⇒ इन प्रवृत्तियों के विजेताओं को भी प्रमाण-पत्र, मेडल आदि आन्तरिक मूल्य वाले पारितोषिक प्रदान किये जाएं।

⇒ इन प्रवृत्तियों के परिणाम से अच्छे मानवीय सम्बन्ध स्थापित होने चाहिए, न कि ईर्ष्या, द्वेष आदि।

⇒ शिक्षकों के चयन के समय इन पाठ्य-सहगामी प्रवृत्तियों में निपुण एवं निष्णात व्यक्तियों को वरीयता दी जानी चाहिए।

अतः स्पष्ट है कि इन सिद्धान्तों के माध्यम से पाठ्य-सहगामी प्रवृत्तियों को सुचारु रूप से चलाने में सहायता मिलती है।

Thankyou

Scanned with CamScanner